International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 156-157

तुलसी का रस वर्णन

डॉ0 जयराम त्रिपाठी

सहा0 प्रोफेसर (हिन्दी), हेमवती नंदन बहु0 राज0 स्नातको0 महा0 नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
हिन्दी साहित्य में तुलसी को सर्वश्रेष्ठ महाकवि के रूप में जाना जाता है। न केवल हिन्दी वरन् विश्व साहित्य में तुलसी जैसे कवि बहुत कम होंगे। तुलसी को रसवादी कवि माना जाता है। काव्य का प्राण रस को मानने वाले विद्वत्जन रस निरूपण को ही काव्य का मुख्य आधार अथवा काव्य की सफलता का द्योतक मानते हैं।

मुल शब्दः तुलसीदास, श्रृंगार, वीर एवं शांत रस

प्रस्तावना

रामचरित मानस के प्रारंभ में ही गोस्वामी तुलसी दास ने लिखा है–

''कबित विवेक एक नहिं मोरे।
सत्य कहौं लिखि कागद कोरे।।
कवि न होउँ नहि बचन प्रवीनू।
सकल कला सब विद्या हीनू।।''[1]

तुलसी भक्त पहले हैं और कवि बाद में। राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप के निर्माण में तुलसी और उनके रामचरितमानस का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मूलतः भक्ति की भावना से ओतप्रोत तुलसी के लिए कविता साधन मात्र है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने कालजयी महाकाव्य साकेत के मुख पुष्ठ पर लिखा है।

''राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।।''

तुलसी की कवित्व के प्रति उदासीनता उन्हें कवि के रूप में तो नहीं लेकिन भक्त के रूप में शीर्ष पर पहुँचा देती है। लगता है तुलसी इस नुकसान से परिचित थे और वे भक्त के रूप में पहले प्रतिष्ठित होना चाहते था, डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव ने कहा है, ''यह नहीं कि तुलसी में काव्य गुणों की सिद्धि के लिए अपेक्षित प्रतिभा न थी, वस्तुतः वे स्वयं अपनी लक्ष्मण रेखा से बँधे थे औरा अपने दायरे से बाहर नहीं आना चाहते थे।''[2]
श्रृंगार को रसराज कहा जाता है, सृष्टि की सभी जाति प्रजाति में व्याप्त श्रृंगार निश्चय ही रसों में श्रेष्ठ है। गोस्वामी तुलसीदास भक्त कवि थे और उन्होनें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का वर्णन किया है, इस कारण सर्वत्र मर्यादा का पालन करते हुए ही श्रृंगार वर्णन किया गया है। संयोग श्रृंगार का वर्णन करते हुए। जनक वाटिका में राम को देखकर सीता के मन में श्रृंगार का उदय होता है और वह राम के रूप पर मोहित हो जाती हैं परन्तु तुलसी ने मर्यादा का उल्लंघन नहीं होने दिया। वह राम को मुड़–मुड़ कर देखती हैं परन्तु संकोच के कारण बहाना वृक्ष और पक्षियों का लेती हैं।

''देखन मिस मृग विहग तरु फिरह बहोरि–बहोरि।
निरखि निरखि रघुवीर छवि बाढइ प्रीति न थोरि।।''[3]

वियोग श्रृंगार का वर्णन भी रामचरित मानस में अत्यन्त सुंदर किया गया है–

''हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।
तुम देखी सीता मृग नैनी।।''[4]

विरह की दशा में राम यह भी भूल जाते हैं कि किससे क्या पूछना है।
हास्य रस के उदाहरण के रूप में हम रामरचितमानस के नारद मोह और परशुराम लक्ष्मण संवाद प्रसंग को देख सकते हैं। किशोर लक्ष्मण द्वारा परशुराम पर किये गये कटाक्ष हास्य रस का अच्छा स्रोत सिद्ध होते हैं–

''मातहिं पितहिं उरिण भए नीके।
गुरु ऋण रहा सोक बड जीके।।''

और

''बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं।
कबहुँ न अस रिस कीन्ह गोसाई।।''

का हास्य व्यक्ति को अंदर तक गुदा गुदा जाता है। रामचरितमानस में लक्ष्मण को मेघनाद द्वारा संधान की गई शक्ति लगने पर राम के वर्णन में करुण रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। इस अवसर में समस्त समाज शोक में निमग्न हो जाता है। विषाद का ऐसा वातावरण उत्पन्न हो जाता है कि चराचर सभी व्याकुल हो जाते हैं–

''मेरो सब पुरुषारथ थाको।
बिपति बँटावंन बन्धु बाहु बिन करौं भरोसो काको।''

रामचरित मानस की निम्न पंक्तियाँ राम के करुणा में बह जाने का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं–

''जौ जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू।
पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
निज जननी के एक कुमारा।
तासु तात तुम प्राण अधारा।।''

रौद्र रस वीर रस की अत्यधिकता का ही रूप है इसका उदाहरण हमें अयोध्या काण्ड के भरत के आगमन के समय लक्ष्मण के आवेश में दिखाई देता है लक्ष्मण कुछ इस तरह भड़क उठते हैं कि राम के समझाने पर ही मानते हैं राम के कथन 'भरत महिमा' को रामचरित मानस के मार्मिक प्रसंगों में से एक माना जाता है–

''क्षत्रि जाति रघुकुल जनम राम अनुग जगु जान।
लातहुँ मारै चढति सिर नीच को धूरि समान।।''[5]

वीर रस के वर्णन में लंका काण्ड के अनेक प्रसंग अतीव सुंदर बन पड़े हैं। परशुराम लक्ष्मण प्रसंग में श्री लक्ष्मण के शब्दों में वीर रस की सरिता बह निकली है। कवितावली में लंका दहन प्रसंग में भी वीर रस का सुंदर वर्णन हुआ है।

''बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल जाल मानो,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।''
केधौं व्योम वीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु
वीर रस वीर तरवारि सी उधारी है।''[6]

भयानक रस का वर्णन रामचरितमानस के सुंदर काण्ड में लंकादहन के प्रसंग में दृष्टव्य है।

''तात मात हा सुनिय पुकारा।
यहि अवसर को हमहिं उबारा।।
हम जो कहा यह कपि नहिं होई।
वानर रूप धरे सुर कोई।।''[7]

महावीर के भयानक रूप से लंका का जन मानस इतना भयभीत हो गया है कि उसने यह मान लिया कि यह सामान्य वानर न होकर कोई अलौकिक शक्ति युक्त देव है जो इस रूप में उपस्थित हुआ है।
वीभत्स रस वहाँ पर पुष्ट माना जाता है जहाँ पर काव्य के वर्णन से ही घृणा का संचार हो जाता है। इस प्रकार के अनेक वर्णन तुलसी के काव्य में भरे पड़े हैं, कवितावली से एक उदाहरण लंका दहन के समय का निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है।

''हाट बाट हाटक पिघलि चलों घी सो घनो
कनक कराही लंक तलफति ताय सों।
नाना पकवान जातुधान बलवान सब,
पागि पागि ढेरी कीन्हीं भली भाँति सों।''[8]

अद्भुत रस के दर्शन हमें रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड मे महावीर हनुमान की पूँछ में कपड़ा लपेटने के प्रसंग में होते हैं।

''रहा न नगर वसन घृत तेला
बाढी पूँछ कीन्ह कपि खेला।।''
और ''हरि प्रेरित तेहिं अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ लाग अकास।।''[9]

अद्भुत रस के सुंदर उदाहरण हैं। शांत रस का स्थायी भाव है निर्वेद। नाटक में इसका अभिनय संभव न होने के कारण नाट्य शास्त्रियों ने इसका वर्णन नहीं किया है भक्त महाकवि तुलसी के काव्य में स्थान स्थान पर शांत रस के दर्शन पूर्ण वैभव के साथ होते चलते हैं, उनकी विनय पत्रिका तो इसका भव्य उदाहरण है। विनय पत्रिका से एक उदाहरण दृष्टव्य है।

जनम गयौ बादिहिं बर बीति।
परमारथ पाले न पड्यो कछु अनुदिन अधिक अनीति।
खेलत खात लड़कपन गो चलि, जौबन जुबतिन लियो जीति।
.....
तुलसी प्रभु ते होइ सो कीजिय समुझि बिरद की रीति।।[10]

तुलसी ने वत्सल रस के दोनो पक्षों संयोग एवं वियोग का चित्रण किया है। वात्सल्य के वर्णन हेतु तुलसीदास ने गीतावली को चुना यद्यपि वर्णन तो अन्य ग्रंथों में भी है पर गीतावली का सर्वश्रेष्ठ कोटि में आता है।

संयोग का उदाहरण

''चुटकी बजावती नचावती कौसल्या माता,
बाल केलि गावति मल्हावती सुप्रेम भर।
किलकि किलकि हंसैं द्वै द्वै दँतुरियाँ लसैं
तुलसी के मन बसैं तोतरे बचन बर।''[11]

वियोग वात्सल्य का भी उदाहरण गीतावली से दृष्टव्य है–

''जिन के विरह विषाद बँटावन खग मृग जीव दुखारी।
मोंहि कहा सजनी समुझावति, हौं तिन्हकी महतारी।।''[12]

समन्वयवाद की महान् भावना से ओत प्रोत तुलसी का काव्य भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरूप को प्रदर्शित करता है। तुलसी के काव्य को रेखांकित करते हुए रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है। ''तुलसी ने अपने समसायिक जन–जीवन को अत्यधिक निकट से देखा है। उच्च संस्कारों से युक्त होने पर भी उनके हृदय में भारतीय जन जीवन के सभी स्तरों के प्रति प्रगाढ़ ममता है।''[13]
लोक नायक की पदवी से विभूषित तुलसी भक्त, कवि, समाजचेता सभी कुछ थे। जनमानस में उच्च मानव मूल्य स्थापित करते हुए उन्होनें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का आदर्श सामाने रखा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास : रामचरितमानस (बालकाण्ड)
2. डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव : तुलसीदास (सं0 डॉ0 वासुदेव सिंह अभिव्यक्ति प्रकाशन–1999) पृष्ठ–94
3. तुलसीराम : रामचरित मानस (बालकाण्ड)
4. तुलसी राम : रामचरितमानस (किष्किंधा काण्ड)
5. तुलसीदास : रामचरिमानस (अयोध्या काण्ड–दोहा सं0 299)
6. कवितावली : लंकाकाण्ड–पद सख्या–05
7. तुलसीदास : रामचरितमानस (सुंदरकाण्ड–दोहा सं0–25–26)
8. तुलसीदास : कवितावली (लंका काण्ड–24)
9. तुलसीदास : रामचरितमानस (सुंदरकाण्ड–दोहा–25)
10. तुलसीदास : विनय पत्रिका (पद संख्या–234)
11. तुलसीदास : गीतावली (बालकाण्ड पद–33)
12. तुलसीदास : गीतावली (अयोध्याकाण्ड पद–85)
13. रामचन्द्र तिवारी :तुलसीदास (उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ–1997), पृष्ठ–68